This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6087**

Unique Paper Code : **205102** **G**

Name of the Paper : प्रश्न-पत्र-2 : प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन कविता

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो के काव्य में वर्णित नारी की पीड़ा पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

कबीरदास की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए।

2. 'विद्यापति प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं' – इस कथन के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए। 15

अथवा

'मृगावती' में निहित लोक-तत्व का विश्लेषण कीजिए।

3. तुलसीदास की भक्ति भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'भ्रमरगीत' के आधार पर सूरदास की गीत-कला पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

4. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×7.5=15

(क) काहे को ब्याही विदेस रे, लखि बाबुल मोरे।

भइया के दी है बाबुल महला-दुमहला,

हम को दी है परदेस, लखि बाबुल मोरे।

मैं तो बाबुल तोरे पिंजडे की चिड़िया,

रात बसे उड़ि जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।

ताक परी मैंने गुड़िया जो छोड़ी,

छोड़ा दादा मियां का देस, लखि बाबुल मोरे।

प्यार भरी मैंने अम्मा जो छोड़ी,

छोड़ी दादी जी की गोद, लखि बाबुल मोरे।

(ख) पीछैं लागा जाइ था, लोक बेद के साथि ।

आगै थैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि ॥

चौसठि दीवा जोइ करि, चौदह चंदा मांहि ।

तिहिं घरि किसको चानिणौं, जिहि घरि गोविन्द नाहिं ॥

(ग) सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकीं जानी भली ।

तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ, कछू मुसुकाइ चली ॥

तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचनलाहु अलीं ।

अनुराग-तड़ाग में भानु उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं ॥

(घ) नंदक नंदन कदंबक तरु–तर,

धिरे-धिरे मुरलि बजाव ॥

समय संकेत – निकेतन बइसल,

बेरि-बेरि बोलि पठाव ॥

सामरि, तोरा लागि,

अनुखन विकल मुरारि ॥

जमुनाक तिर उपवन उदवेगल,

फिर-फिर ततहिं निहारि ॥

5. किन्हीं **दो** का रचना-कौशल (लगभग **150** शब्दों में) निर्देशानुसार लिखिए : 2×7.5=15

(क) "सिखवति चलन जसोदा मैया।

अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाई धरनी धरे पैया॥

कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति, उर आनंद भरि लेति बलैया।

कबहुँक कुल-देवता मनावति, चिरजीवहु मेरौं कुँवर कन्हैया।

कबहुँक बल कौं टेरि बुलावति, इहि आँगन खेलौ दोउ भैया।

सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नँदरैया॥" (वात्सल्य भाव)

(ख) "को बिरहिनी को दुख जाँणै हो।

जा घट बिरहा सोइ लखिहै, कै कोई हरिजन मानै हो।

रोगी अंतर बैद बसत है, बैद ही ओखद जाँणैं हो।

बिरह दरद उरि अंतरि माँही, हरि विणि सब सुख काँनै हो।

दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत, बसी सुत माँनै हो।

चात्रग स्वाति बूँद मन माँही, पीव पीव उकलाँणै हो।

सब जग कूड़ो कंटक दुनिया, दरद न कोई पिछाँणै हो।

मीराँ के पति आप रमैया, दूजों नहिं कोई छाँणै हो॥" (विरह-भावना)

(ग) "जौ मैं ग्यानं बिचार न पाया

तौ मैं यौंहीं जन्म गँवाया।

यहु संसार हाट करि जांनूं सबको बणिजण आया।

चेति सकै सो चेतौ रे भाई मूरखि मूल गँवाया।

थाके नैंन बैंन भी थाकै, थाकी सुंदर काया।

जामंण मरण ए द्वै थाके, एक न थाकी माया।" (ज्ञान की महत्ता)

(घ) "रावनु सो राजरोगु बाढ़त बिराट-उर

दिनु-दिनु बिकल, सकल सुख राँक सो।

नाना उपचार करि हारै सुर, सिद्ध, मुनि,

होत न बिसोक, औत पावै न मनाक सो॥

राम की रजाइतें रसाइनी समीर सूनु

उतरि पयोधि पार सोधि सरवाक सो।

जातुधान-जुट पुटपाक लंक-जातरूप-

रतन जतन जारि कियो हैं मृंगाक-सो॥" (काव्य-सौन्दर्य)